# हिन्दी ध्वनियों का उद्गम एवं विकास

भारोपीय भाषा की ध्वनियों का विकास किसी एक मूल भाषा की ध्वनियों से हुआ होगा पर मूल भारोपीय भाषा की ध्वनियों की कोई निश्चित रूप-रेखा ज्ञात नहीं है। हां, एक बात अवश्य है, वह यह कि कुछ भाषा वैज्ञानिकों ने उनका एक कल्पित रूप तैयार कर लिया है। मूल भारोपीय भाषा की कल्पित ध्वनियां निम्नलिखित हैं :-

1. **स्वर**– मूल भारोपीय भाषा में अनुमानतः निम्नलिखित स्वर होते होंगे:-

**अतिह्रस्व–अ**

**ह्रस्व–अ, इ, उ, ऋ, लृ, ऍ, ऑ, नॅ, मॅ**

**दीर्घ–आ, ई, ऊ, ॠ, लृ, ए, ओ, न, म्**

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार न, म आक्षरिक थे और इनका प्रयोग ह्रस्व और दीर्घ दोनों रूपों में होता था।

2. **व्यंजन**– मूल भारोपीय भाषा में संभवतः निम्नलिखित व्यंजन ध्वनियां थीं:-

**स्पर्श**– कंठ–तालव्य : क, ख, ग, घ, ङ, (य युक्त)।

जिह्वामूलीय : क, ख, ग, घ, ङ।

कण्ठोष्ठ्य : क, ख, ग, घ, ङ (व–युक्त)।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार कवर्ग तीन थे। उपर्युक्त वर्गों में द्वितीय अर्थात् जिह्वामूलीय समान था पर प्रथम वर्ग य–युक्त था–क्य, ख्य, ग्य, घ्य, ङ्य।

तृतीय व–युक्त था– क्व, ख्व, ग्व, घ्व, ङ्व।

दंत्य : त, थ, द, ध, न।

ओष्ठ्य : प, फ, ब, भ, म।

कंपित तालव्य : र

पार्श्विक : ल

ऊष्म दंत्य : स, ज

संदिग्ध संघर्षी ध्वनियां : ह्, ह, थ़, द़, ख़, ग़, झ।

## भारत-ईरानी

जिस भारत-ईरानी भाषा की कोख से वैदिक और ईरानी की उत्पत्ति हुई थी, उसक ध्वनियां निम्नलिखित थीं-

1. **स्वर-**

हस्व : अ, इ, उ।
दीर्घ : आ, ई, ऊ।

**संयुक्त स्वर-**

हस्व : ऐ, औ।
दीर्घ : आइ, आउ।

2. **व्यंजन-**

कण्ठ्य : क, ख, ग, घ, ङ।
तालव्य : च, x, ज, झ, ञ।
अग्रतालव्य : च x ज, झ, ञ।
दंत्य : त, थ, द, ध, न।
ओष्ठय : प, फ, ब, भ, म।
संघर्षी : स, ज़, श, झ।
अर्द्धस्वर : य, व।

## वैदिक

भाषा विज्ञान का यह नियम है कि ध्वनियां स्थिर नहीं बल्कि गतिशील होती हैं। काल, स्थान तथा जलवायु के कारण वे परिवर्तित होती रहती हैं। अतः वैदिक काल तक आते-आते मूल भाषा की ध्वनियों की स्थितियों में परिवर्तन हो गया।

आचार्य नरेन्द्र शर्मा के अनुसार वैदिक संस्कृत में 52 मूल ध्वनियां थीं। इन्हें निम्नलिखित क्रम में रखा जा सकता है-

1. **स्वर-**
   1. नौ मूल स्वर-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ।
   2. चार संयुक्त स्वर-ए, ओ, ऐ, औ
2. **व्यंजन-**
   1. कवर्ग : क, ख, ग, घ, ङ (कण्ठ्य)
      चवर्ग : च, छ, ज, झ, ञ (तालव्य)
      टवर्ग : ट, ठ, ड, ढ, ण (मूर्धन्य)
      तवर्ग : त, थ, द, ध, न (दंत्य)
      पवर्ग : प, फ, ब, भ, म, (ओष्ठय)

2. अन्तस्थ : य, र, ल, व

3. ऊष्म : श, ष, स, ह

4. विसर्ग : (:) जिह्वामूलीय उपध्मानीय (≍);

अनुस्वार ( ˙ )

5. दुःस्पृष्ट ल तथा ल्ह।

उपर्युक्त 52 ध्वनियों के अलावा देवेन्द्रनाथ शर्मा ने वेद की दो ध्वनियों का और उल्लेख किया हैः ह्रस्व ग्वु एवं दीर्घ ग्वुं।

इस प्रकार वैदिक संस्कृत में कुल 54 ध्वनियां थीं।

# लौकिक संस्कृत

लौकिक संस्कृत की ध्वनियों को अंकित करने के पहले वर्ण और स्वर का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। अतः उन्हें अधोलिखित पंक्तियों में परिभाषित किया जा रहा है–

**वर्ण–** वर्ण उस लघुत्तम इकाई अर्थात् सार्थक ध्वनि को कहा जाता है जिसके पुनः टुकड़े न किए जा सकें। वर्ण ऐसी छोटी से छोटी ध्वनि है जिसे खण्डित न किया जा सके। इसलिए वर्ण का अक्षर कहते हैं।

**वर्णमाला–** भाषा के सभी वर्णों के समूह को वर्णमाला कहा जाता है।

**वर्ण या ध्वनि के भेद–** ध्वनि के दो प्रकार होते हैं। (1)स्वर (2)व्यंजन।

1. **स्वर–**स्वर वे वर्ण हैं जिनके उच्चारण में किसी दूसरे वर्ण की सहायता की आवश्यकता नहीं होती है। स्वरों की उत्पत्ति एक अपेक्षाकृत खुले वाक्–पथ से होती है जो एक अनुनाद–विवर के रूप में कार्य करते हैं। स्वर की सबसे आसान परिभाषा यह है, "जिन ध्वनियों के उच्चारण के समय निःश्वास में कहीं कोई रुकावट न हो, उन्हें स्वर ध्वनियां कहा जाता है। जैसे–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ।
2. **व्यंजन–** जो वर्ण स्वरों की सहायता के बिना स्पष्ट नहीं बोले जा सकें, उन्हें व्यंजन कहते हैं। वर्णों की उत्पत्ति के समय या

तो आंशिक रूप से या पूर्ण रूप से वाक्–पथ में अवरोध उपस्थित होता है। व्यंजन ध्वनियों की सबसे आसान परिभाषा यह है "जिन ध्वनियों के उच्चारण में निःश्वास में कहीं न कहीं अवरोध उपस्थित होता है, उन्हें व्यंजन ध्वनियां कहते हैं। उदाहरण– कवर्ग, चवर्ग आदि।

स्वर के उच्चारण करने में जो समय लगता है उसके अनुसार स्वर के तीन नाम हैं:–

क) ह्रस्व स्वर

ख) दीर्घ स्वर

ग) प्लुत स्वर

इस संदर्भ में लिखा गया है–

**"एक मात्रा भवेद् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।**
**त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यंजनं चाऽर्थमात्रिकम्।।"**

क) जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का काल लगता है उसे **ह्रस्व स्वर** कहते हैं।

ख) जिस स्वर के उच्चारण में दो मात्रा का काल लगता है उसे **दीर्घ स्वर** कहते हैं।

ग) जिस स्वर के उच्चारण में तीन मात्रा–काल लगता है उसे **प्लुत स्वर** कहते हैं। व्यंजन वर्ण को आधा मात्रा वाला जानना चाहिए।

## मूल स्वर

ह्रस्व–अ, इ, उ, ऋ, ऌ

दीर्घ–आ, ई, ऊ, ॠ

प्लुत–आउ, ईउ, ऊउ, ॠउ, ऌउ, एउ, ओउ, ऐउ, औउ

## संयुक्त स्वर

जो स्वर दो स्वरों के संयोग से बनते हैं उन्हें संयुक्त या संध्य स्वर कहते हैं। संस्कृत में निम्नलिखित संयुक्त स्वर हैं–

ए–ए+इ=ए

ओ–अ+उ=ओ

ऐ–अ+ए=ऐ

और–अ+ओ=औ

इस प्रकार कुल मिलाकर (अर्थात् 9 मूल स्वर और 4 संयुक्त स्वरों की संख्या 13 है।

## व्यंजन

'व्यंजन वर्णों' के सम्बन्ध में कहा गया है कि **'न हयेकाचं बिना व्यंजनस्योच्चारणं भवति।'** अर्थात् व्यंजन का उच्चारण अच् (स्वर) के बिना नहीं हो सकता है। क+अ=क, ख्+अ=ख आदि।

## व्यंजनों के भेद

1. **स्पर्श**– जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ, तालु आदि स्थानों को छूती है उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। क से लेकर म तक के वर्णों को स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

   कवर्ग–क, ख, ग, घ, ङ
   चवर्ग–च, छ, ज, झ, ञ
   टवर्ग–ट, ठ, ड, ढ, ण
   तवर्ग–त, थ, द, ध, न
   पवर्ग–प, फ, ब, भ, म।

2. **अन्तस्थ**– जो वर्ण स्वर और व्यंजनों के मध्य होते हैं उन्हें अन्तस्थ व्यंजन कहते हैं। निम्नलिखित चार वर्ण अन्तस्थ हैं।
   यण–य, व, र, ल
   इनमें से य, व व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में अन्य वर्णों की अपेक्षा वायु मुख में कम रुकती है। अतः इन्हें अर्ध स्वर या अर्ध व्यंजन कहा जाता है।

3. **ऊष्म**– जिन वर्णों के उच्चारण में अन्तर से कुछ अधिक श्वास लेना पड़ता है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। निम्नलिखित व्यंजन ध्वनियां ऊष्म कहलाती हैं–
   शल्–श, ष, स, ह
   विशेष– परुष व्यंजन–स्पर्श पांच वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण तथा श, ष, स, ह को परुष व्यंजन कहा जाता है। शेष वर्ण कोमल व्यंजन कहलाते हैं। इस प्रकार व्यंजन वर्णों की कुल संख्या 33 है।

## विसर्ग

किसी भी स्वर–वर्ण के बाद आने वाले ( ं ) तथा ( ः ) को क्रमशः अनुस्वार तथा विसर्ग कहा जाता है। अनुस्वार न्, म् के स्थान पर होता है और विसर्ग र् और स् के स्थान पर होता है।

## जिह्वामूलीय

'क' तथा 'ख्' के पूर्व अर्धविसर्ग के समान जो ध्वनि होती है उसे जिह्वामूलीय ध्वनि कहते हैं। जैसे–≍क≍ख।

## उपध्मानीय

'प' तथा 'फ' के पूर्व आधे विसर्ग के समान जो ध्वनि होती है; उसे उपध्मानीय कहा जाता है। जैसे–≍प≍फ।

## अयोगवाह

विसर्ग, अनुस्वार, जिह्वामूलीय तथा उपध्मानीय–ये चारों विशिष्ट स्वर कहलाते हैं। ये शर् के रूप में भी अभिव्यक्त होते हैं। इन्हें ''अयोगवाह'' कहते हैं।

## यम

वर्णों के प्रथम चार अक्षरों के पश्चात् किसी भी वर्ग का पांचवां अक्षर आने पर पूर्व वर्ण के समान एक और अक्षर हो जाता है। प्रातिशाख्य में उसे 'यम' की संज्ञा दी गई है। जैसे–पलिक्कनी, अग्ग्नि', चखख्नतुः घ्घ्नन्ति। क, ख, ग, घ के पश्चात् यहां पंचम वर्ण परे रहने पर वही अक्षर पुनः आये हैं। इस प्रकार यम की संख्या चार है।

निष्कर्ष यह है कि 13 स्वर, 33 व्यंजन, 4 विशिष्ट स्वर तथा 4 यम मिलाकर लौकिक संस्कृत में वर्णों की संख्या 54 हुई।

# हिन्दी की ध्वनियाँ

यद्यपि ऋ, ॠ, ऌ, ॡ–इन चार ध्वनियों का उल्लेख देवनागरी लिपि में है पर 'हिन्दी' उच्चारण में इनका प्रयोग नहीं है। संस्कृत तत्सम शब्दों में इसका लिखित रूप तो अवश्य है पर व्यवहार के धरातल पर इसका उच्चारण 'रि' होता है। अतः हिन्दी की स्वर ध्वनियों में इसकी

गणना नहीं होती। इसी प्रकार ऋ, ऌ, ॡ प्राचीन ध्वनियां हिन्दी में प्रयुक्त होती हैं।

हिन्दी में केवल निम्नलिखित 10 स्वर–ध्वनियां हैं–

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

इनमें से अ, इ, उ, ए, ओ ह्रस्व हैं और आ, ई, ऊ, ऐ, औ दीर्घ हैं।

## व्यंजन ध्वनियां

हिन्दी में निम्नलिखित व्यंजन ध्वनियां पायी जाती हैं–

**स्पर्श–** क्, ख्, ग्, घ्, ङ् (कवर्ग)
च्, छ्, ज्, झ्, ञ् (चवर्ग)
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् (टवर्ग)
त्, थ्, द्, ध्, न् (तवर्ग)
प्, फ्, ब्, भ्, म् (पवर्ग)

**अन्तस्थ–**य्, व्, र्, ल् (यण)

**ऊष्म–**श्, ष्, स्, ह (शल)

उच्चारण सम्बन्धी विशेषताओं के आधार पर हिन्दी के स्वरों को निम्नलिखित चक्र में दर्शाया गया है–

## स्वर

| | अग्र | मध्य | पश्च |
|---|---|---|---|
| संवृत | इ, ई, | | ऊ, उ |
| अर्धसंवृत | ए | | ओ |
| अर्धविवृत | ऐ | अ | औ, ऑ |
| विवृत | | | आ |

## व्यंजन

स्थान और प्रयत्न की दृष्टि से व्यंजन ध्वनियों का विभाजन अग्रांकित है–

| स्थान / प्रयत्न | द्वयोष्ठ्य | दंत्योष्ठ्य | दंत्य | वर्त्स्य | तालव्य | मूर्द्धन्य तालव्य | कोमल मूलीय | जिह्वा–स्वर यत्रमुखी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्पर्श | पफबभ | | तथदध | | चछजझ | टठडढ | कखगघ | क् |
| नासिक्य | म, म्ह | | | न, न्ह | ञ | ण | ङ | |
| पार्श्विक | | | | ल,ल्ह | | | | |
| लुंठित या कंपनजात | | | | र | | | | |
| ताडनजात या उत्क्षिप्त | | | | | | ड़, ढ़ | | |
| संघर्षी | | फ, व | | स,ज | श | | ख़,ग़ | ह |
| अर्धस्वर | व | | | | य | | | |

वर्ग के प्रथम, तृतीय और पंचम तथा यरलव अल्पप्राण हैं और द्वितीय और चतुर्थ वर्ग और श्लस्ह अल्पप्राण हैं। नासिक्य, पार्श्विक, उत्क्षिप्त तथा अर्ध स्वर घोष हैं।

हिन्दी लेखन में 'ञ्' का तत्सम शब्दों में प्रयोग तो होता है पर उच्चारण 'न' का होता है। जैसे–चञ्चल का चंचल उच्चारण होता है।

इसी प्रकार तत्सम शब्दों में ण का प्रयोग तो होता है पर उच्चारण में यह 'न' के रूप में परिवर्तित हो जाता है। जैसे–पण्डित का उच्चारण मानक हिन्दी में पन्डित होता है।

लेखन में ष का प्रयोग तो होता है पर उच्चारण में यह 'श' रहता है।

## हिन्दी की नवविकसित ध्वनियाँ

1. अए(ऐ), अओ(औ), ड़, ढ़, व्, म्ह।
2. अरबी–फारसी से आगत ध्वनियां–क़्, ख़्, ग़्, ज़्, फ़्।
3. अंग्रेजी–ऑ।

## मान स्वर (Cardinal Vowels)

प्रो. डेनियल जोन्स एक बहुत बड़े भाषा वैज्ञानिक थे। वे लन्दन विश्वविद्यालय में भाषा विज्ञान पढ़ाते थे। उनके अनुसार अंग्रेजी में 13 मूल स्वर तथा 2 संधि स्वर हैं और व्यंजन ध्वनियों की संख्या 26 है। उन्होंने आठ प्रधान स्वर निश्चित किये, जिन्हें मान स्वर या प्रधान (Cardinal Vowels) कहा जाता है। अंग्रेजी के मानक स्वर संसार की सभी भाषाओं के मानदण्ड हैं। मानस्वरों के निर्धारण में यह देखा जाता है कि किसी स्वर का उच्चारण करते समय मुख विवर कितना खुलता है और जीभ का कौन सा हिस्सा उठता है। यदि मुखद्वार पूरा खुला रहता है तो उच्चारित स्वर विवृत कहा जायेगा और उसकी अपेक्षा जब कम खुलेगा तब अर्ध विवृत स्वर होगा। इसी प्रकार अत्यधिक बन्द रहने पर संवृत स्वर का उच्चारण होगा। जब उच्चारण करते समय मुख द्वारा थोड़ा बन्द रहेगा तब अर्धसंवृत स्वर होगा।

उच्चारण करते समय जब जीभ का अगला भाग ऊपर उठता है तब इस प्रकार से उच्चरित स्वर को अग्र स्वर कहा जाता है और जब जीभ का पिछला हिस्सा ऊपर उठता है तब पश्च स्वर उच्चरित होगा। कुछ स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग ऊपर रहता है। ऐसे स्वरों को मध्य स्वर कहा जाता है।

अंग्रेजी के मान स्वरों को अग्रलिखित चित्र में दिखलाया गया है–

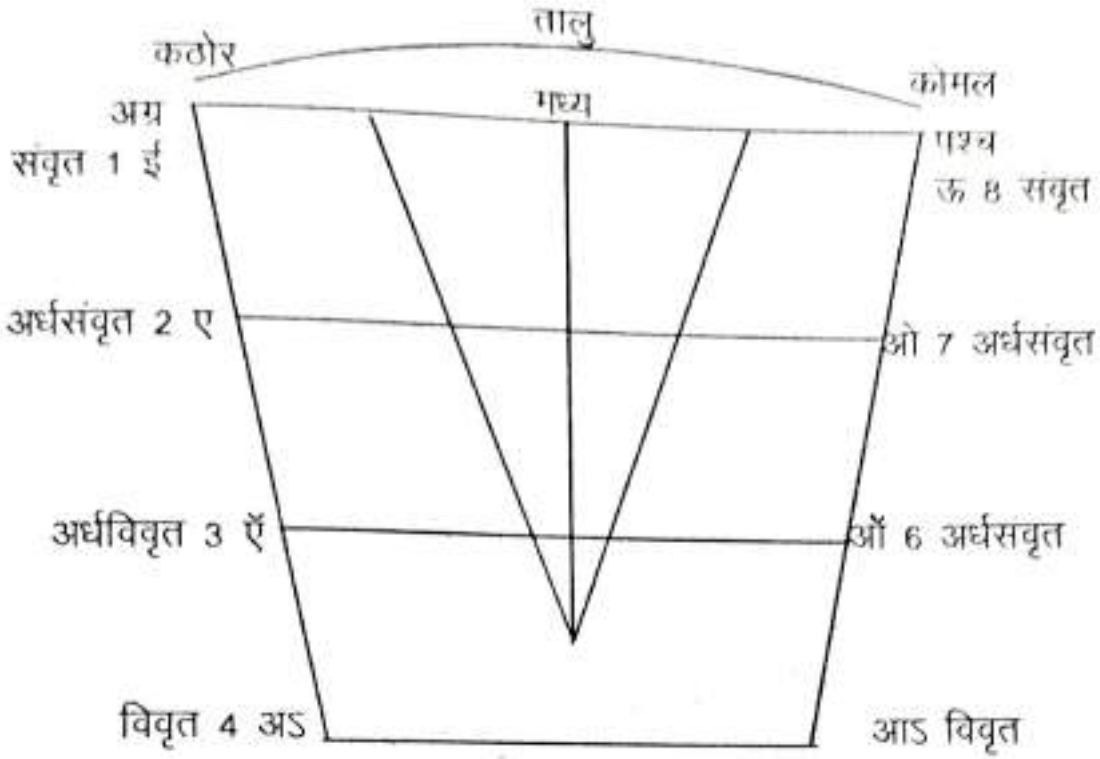


1. विवृत अग्र स्वर–अऽ
2. विवृत पश्च स्वर–आ
3. अर्ध विवृत अग्र स्वर–ऍ
4. अर्ध विवृत पश्च स्वर–ओं
5. अर्ध संवृत अग्र स्वर–ए
6. अर्ध संवृत पश्च स्वर–ओ
7. संवृत अग्र स्वर–ई
8. संवृत पश्च स्वर–ऊ

## मान स्वर की-निर्धारण-प्रक्रिया

**1. अऽ–** यह अग्र विवृत मान स्वर है। इसके उच्चारण में जीभ प्रायः शयित अवस्था में पड़ी रहती है। उच्चारण के समय उसका केवल अगला भाग थोड़ा सा उठा रहता है।

**2. आ–** यह पश्च विवृत स्वर है। इसके उच्चारण में जीभ प्राकृत अवस्था में पड़ी रहती है। उच्चारण करते समय उसका पश्च भाग किंचित उठा रहता है।

**3. ऍ–** यह अग्र अर्ध विवृत स्वर है। इसके उच्चारण में जीभ का अग्र भाग अऽ के उच्चारण स्थान से कुछ और ऊपर उठ जाता है तब ऍ स्वर का निर्धारण होता है।

4. ओं– यह पश्च अर्ध विवृत मान स्वर है। इसके उच्चारण में जीभ का पश्च भाग आ की अपेक्षा कुछ और अधिक ऊपर उठ जाता है।

5. ए– यह अर्ध संवृत अग्र मान स्वर है। जब जीभ का अग्र भाग मान स्वर ऐं के उच्चारण स्थान से और भी ऊपर उठ जाता है तब ए स्वर बनता है।

6. ओ– यह पश्च अर्ध संवृत स्वर है। जब उच्चारण करते समय जीभ का पश्च भाग ओ के उच्चारण स्थान से और भी ऊपर उठ जाता तब ओ पश्च अर्ध संवृत स्वर बनता है।

7. ई– यह अग्र संवृत स्वर है। जब जिह्वा का अगला भाग मुखद्वार में ऊपर उठकर कठोर तालु के पास इतने सन्निकट पहुंच जाता है कि तनिक भी उससे ऊपर उठे तो प्रश्वास में रुकावट और संघर्ष के कारण व्यंजन ध्वनि उत्पन्न होने लगे तब संवृत अग्र स्वर उच्चरित होता है।

8. ऊ– यह पश्च संवृत स्वर है। जब जीभ का पश्च भाग मान स्वर के उच्चारण स्थान से इतना अधिक ऊपर उठ जाता है कि इससे और ऊपर उठने पर निःश्वास में रुकावट होने के कारण स्वर की जगह पर व्यंजन का उच्चारण होने लगेगा तब ऊ ध्वनि का प्रादुर्भाव होता है।

भारतीय भाषाविदों ने स्वरों का विभाजन निम्नलिखित रूप में किया है–

1. अ– कण्ठस्थानीय विवृत स्वर।
2. इ– तालुस्थानीय विवृत स्वर।
3. ऋ– मूर्द्धस्थानीय विवृत स्वर।
4. ऌ– दन्तस्थानीय विवृत स्वर।
5. उ– ओष्ठस्थानीय विवृत स्वर।
6. ए– कण्ठतालव्य विवृत स्वर।
7. ऐ– कण्ठतालव्य विवृततर स्वर।
8. ओ– कण्ठोष्ठय विवृत स्वर।
9. औ– कण्ठोष्ठय विवृततर स्वर।

हिन्दी के स्वरों को यदि हम जोन्स के द्वारा निर्धारित मानदण्ड स्वरों की कसौटी पर तौलें तो निम्नलिखित स्थान निर्धारण होता है :–

# स्वरों के प्रकार

उत्पत्ति के अनुसार स्वर तीन प्रकार के होते हैं :–

1. **मूल स्वर–** जिन स्वरों की उत्पत्ति किसी अन्य स्वरों से नहीं होती है, उन्हें **मूल स्वर (वा ह्रस्व)** कहा जाता है। हिन्दी में मूल स्वर चार हैं– अ, इ, उ, ऋ।

2. **सन्धि स्वर–** जो स्वर मूल स्वरों के संयोग से बनते हैं, उन्हें संधि स्वर कहते हैं। जैसे–आ, ई, ऐ, ओ, औ।

संधि स्वरों के भेद हैं–

(क) **दीर्घ या स्वरों की संधि–** किसी एक मूल स्वर में उसी मूल स्वर के संयोग से जो स्वर बनता है उसे दीर्घ स्वर कहते हैं। जैसे–अ+अ=आ, इ+इ=ई, उ+उ=ऊ। इस प्रकार आ, ई, ऊ दीर्घ स्वर बने हैं। इसी प्रकार दो स्वरों के मेल से जो स्वर बनते हैं, उन्हें स्वर संधि कहते हैं। जैसे–ए, ओ, ऐ, औ।

(ख) **व्यंजन और स्वर संधि–** जब व्यंजन और स्वर के संयोग से कोई स्वर बनता है, उसे व्यंजन और स्वर संधि कहते हैं। जैसे–ऋ, ऌ।

**संयुक्त स्वर–**भिन्न–भिन्न स्वरों में संयोग से जो स्वर बनता है उसे संयुक्त स्वर कहते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि दो स्वरों का संयुक्त रूप संयुक्त स्वर है। जैसे–अ+इ=ए, अ+उ=ओ, अ+ए=ऐ, आ+ओ=औ।

तितउ में अ उ का संयोग है और देवा एधन्ते में आ ए का संयोग है। इस प्रकार, शोभना औषधय में आ ओ का तथा बालका उत्साहवन्तः में आ उ का संयोग है। संयुक्त व्यंजनों के समान संयुक्त स्वर भी अनेक हो सकते हैं।

# व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यंजनों का वर्गीकरण प्रयत्न, घोषत्व, मात्रा तथा स्थान के आधार पर किया जाता है।

**आभ्यान्तर प्रयत्न के आधार पर–** उच्चारण की विविधता की दृष्टि से व्यंजनों के तीन भेद हैं–

1. **स्पर्श (Plosive)–** जिन व्यंजनों के उच्चारण के समय जीभ मुख के किसी भाग का स्पर्श करती है और वायु कुछ क्षण

रुककर झटके के साथ बाहर निकलती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहा जाता है। कवर्ग, चवर्ग आदि स्पर्श व्यंजन कहे जाते हैं। (कादयो भावसानाः स्पर्शाः)।

2. **अन्तरथ (Semi Vowel)**– अन्तरथ व्यंजन का स्थान स्वर और व्यंजनों के मध्य है। उच्चारण की दृष्टि से अन्तरथ वर्णों की स्थिति स्वर और व्यंजनों के मध्य होती है। अतः इन्हें अन्तरथ अर्धस्वर कहते हैं। इनकी संख्या चार है–य्,र्,ल्,व्।

3. **ऊष्म (Fricative)**– इनके उच्चारण में श्वास घर्षण के साथ बाहर निकलती है जिससे श्वास में ऊष्मा (गर्मी) आ जाती है। इसी कारण इन्हें ऊष्ण वर्ण कहते हैं। ऊष्म वर्ण भी संख्या में चार हैं–श्,ष्,स्,ह्।

4. **स्पर्श संघर्षी**– जिन वर्णों के उच्चारण में जिहा का अगला भाग तथा कोमल तालु इतने निकट आ जाते हैं कि मुख विवर कुछ सँकरा हो जाने से श्वास कुछ रगड़ खाती हुई बाहर निकलती है उन्हें स्पर्श संघर्षी व्यंजन कहते हैं। जैसे–य्,छ्,ज्,झ्।

5. **संघर्षी**– जिन वर्णों के उच्चारण में मुख मार्ग अत्यन्त संकरा हो जाता है और श्वास अधिक रगड़ खाती हुई शीत्कार की ध्वनि के साथ बाहर निकलती है उन्हें संघर्षी व्यंजन कहा जाता है। जैसे–फ्, ब्, ज्, ख्, ग्, स्, ह्।

6. **अनुनासिक**– जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास मुँह के साथ नासिका से निकलती है। उन्हें अनुनासिक कहते हैं। जैसे–ङ्, ञ्, ण्, न्, म्।

7. **पार्श्विक**– जिस वर्ण के उच्चारण में जीभ का अगला भाग वर्त्स्य को इस प्रकार दबाता है कि श्वास जीभ के अगल–बगल से होकर निकलती है उसे पार्श्विक व्यंजन कहा जाता है। जैसे–ल्।

8. **लुंठित या प्रकम्पी**– जिस वर्ण के उच्चारण में जीभ की नोक वर्त्स्य के पास श्वास को इस प्रकार रोकती है कि उससे जिहा में प्रकम्पन होता है उसे लुंठित या प्रकम्पी व्यंजन कहते हैं। जैसे–र्।

9. **उत्क्षिप्त**– जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ की नोक उलटकर मूर्द्धा से इस प्रकार टकराती है कि श्वास द्वारा मुख विवर झटके के साथ खोल दिया जाता है उन्हें उत्क्षिप्त ध्वनियां कहते हैं। जैसे–ड़, ढ़।

10. **अर्द्धस्वर**– जिनके उच्चारण में जीभ या निचला ओठ ऊपरी ओठ से इस प्रकार मिलते हैं कि श्वास रुकती तो नहीं बल्कि संकरे मार्ग से बाहर निकल जाती है उन्हें अर्धस्वर कहते हैं। जैसे–य, व।

## बाह्य प्रयत्न के आधार पर

वर्णों के उच्चारण के समय श्वास का मुख के बाहर जो यत्न होता है, उसे बाह्य प्रयत्न कहा जाता है। हिन्दी में प्रयत्न निम्नलिखित हैं–

1. **नाद**– वर्णों के उच्चारण में जब स्वरतंत्रियों का कम्पन होता है, उसे नाद प्रयत्न कहते हैं। (हशः नादाः)। जैसे–य,र,ल,व,म्।
2. **घोष**– नादयुक्त वायु से उच्चरित होना घोष प्रयत्न होता है। जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर–तंत्र में कंपन होता है उन्हें घोष या सघोष व्यंजन कहते हैं। (हशः घोषाश्च)। जैसे–ग्, घ्, ङ्, ज्, झ्, ञ्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, द्, ध्, न्, ब्, भ्, म्, य्, ल्, व्, ह्।
3. **अघोष**– नाद रहित वायु से उच्चरित होना अघोष प्रयत्न कहा जाता है। जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर–यंत्र में कम्पन नहीं होता है उन्हें अघोष व्यंजन कहते हैं। जैसे–क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्, श्, ष्, स ।
4. **अल्पप्राण**– वर्णों के उच्चारण में जब प्राण वायु अल्प मात्रा में होती है तब उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। (वर्गाणां प्रथम तृतीय पंचमा यणश्चाल्प प्राणो)। जैसे–वर्गों के प्रथम, तृतीय एवं पंचम व्यंजन अल्पप्राण हैं।
5. **महाप्राण**– वर्णों की उत्पत्ति में जब प्राणवायु अधिक मात्रा में लगती है तो उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं। वर्णों के द्वितीय तथा चतुर्थ व्यंजन महाप्राण कहलाते हैं। (वर्गाणां द्वितीय–चतुर्थी श्लाश्च महाप्राणाः)।